"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

राष्ट्रीय सेवा भारती

सेवा संगम की भूमिका

देश भर में हजारों स्वयंसेवी संस्थायें समाज में व्याप्त असमानता को दूर करने और वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित व पीड़ित जन समुदाय के जीवन को क्षुधा मुक्त, रोग मुक्त, व्यसन मुक्तकर, "**शिक्षित, स्वावलंबी एवं संस्कारयुक्त समरस समाज का निर्माण करने में कार्यरत हैं।**"

इन संस्थाओं के सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय सेवा भारती एक छत्र संस्था (Umbrella Organization) के रूप में कार्य कर रही है। जिसके अन्तर्गत लगभग 1000 स्वयंसेवी सेवा संस्थायें संलग्नित हैं।

इन संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़े एवं सभी मिलकर समाज के इस पुनीत कार्य में आगे बढ़ें, इस दृष्टिकोण से सभी संस्थाओं का जागरण कर राष्ट्रीय सेवा संगम में राष्ट्रीय मंच पर एकत्रित किया जाता है ।

प्रथम राष्ट्रीय सेवा संगम बंगलुरू में 6, 7, 8 फरवरी 2010 को सम्पन्न हुआ। इस वर्ष संगम का ध्येय वाक्य था "**परिवर्तन**" । इस संगम में देश भर से 428 सेवा संस्थाओं के 980 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को परम पूजनीय सरसंघचालक, पूजनीय सुदर्शन जी, माननीय भैया जी जोशी, माननीय मदन दास देवी जी का मार्गदर्शन एवं श्री श्री रविशंकर जी और बाबा रामदेव जी का आशीर्वचन प्राप्त हुआ ।

द्वितीय राष्ट्रीय सेवा संगम नई दिल्ली में 4, 5, 6 अप्रैल 2015 को आयोजित किया गया। द्वितीय सेवा संगम का ध्येय वाक्य था "**समरस भारत- समर्थ भारत**"। 3500 प्रतिभागियों ने देश के हर क्षेत्र से आकर अपने विचार एवं अनुभव आपस में बांटने का अवसर प्राप्त किया। सभी प्रतिभागियों ने परम पूजनीय सरसंघचालक, पूजनीय अमृतआनन्दमयी मां, श्री सुभाष चन्द्रा (अध्यक्ष, स्वागत समिति, जी. टी. वी.), श्री अजीम प्रेम जी - मुख्य अतिथि (अध्यक्ष-विप्रो), श्री जी. एम. राव विशिष्ट अतिथि (संस्थापक अध्यक्ष-जीएमआर ग्रुप) एवं सेवा क्षेत्र के अनुभवी कार्यकर्ताओं एवं प्रमुख महानुभावों के विचार सुनने का अवसर प्राप्त किया। राष्ट्रीय सेवा भारती की संलग्नित संस्थाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्यों की प्रदर्शनी मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही।

इसी क्रम में "**स्वावलम्बी भारत-समृद्ध भारत**" ध्येय वाक्य के साथ तृतीय राष्ट्रीय सेवा संगम का आयोजन 7, 8 एवं 9 अप्रैल 2023 को जामडोली,जयपुर में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन रा. स्व. स. के परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी द्वारा किया गया, मुख्य अतिथि के रूप में पीरामल समूह के अध्यक्ष श्री अजय पीरामल जी एवं अध्यक्ष के नाते पूजनीय संत बालयोगी उमेश नाथ जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। देश भर से 872 से अधिक संस्थाओं से 2628 प्रतिनिधियों के साथ सेवा प्रेमी, प्रसिद्ध उद्योगपति, पूजनीय संत, खेल और कला जगत से गणमान्य लोग सम्मिलित हुए ।

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

सेवा संगम भूमि पूजन

एवं

प्रेस कांफ्रेंस

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

भूमि पूजन

दिनांक 9 मार्च 2023 को केशव विद्यापीठ, जामडोली में राष्ट्रीय सेवा संगम के निमित्त भूमिपूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।भूमि पूजन के अवसर पर राष्ट्रीय सेवा भारती के अध्यक्ष मा. पन्नालाल भंसाली जी, उपाध्यक्ष श्रवण कुमार जी, उत्तर पश्चिम क्षेत्र के सेवा विभाग के प्रमुख शिव लहरी जी, संगठन मंत्री मूलचंद सोनी जी,राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष जे.पी. सिंहल जी , केशव विद्यापीठ जामडोली के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता जी समेत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं राष्ट्रीय सेवा भारती के प्रमुख पदाधिकारीउपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सेवा संगम प्रेस कांफ्रेंस

दिनांक 21 मार्च 2023 को प्रेस क्लब ऑफ इण्डिया, दिल्ली में राष्ट्रीय सेवा संगम से जुड़ी जानकारी मीडियाकर्मियों के साथ साझा की गई। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा भारती के अध्यक्ष श्री पन्नालाल जी भंसाली एवं महामंत्री श्रीमती रेणु पाठक जी ने पत्रकारों को संबोधित किया।

मा. पन्ना लाल भंसाली जी, अध्यक्ष- (राष्ट्रीय सेवा भारती), एवं श्रीमती रेणु पाठक जी, महामंत्री- (राष्ट्रीय सेवा भारती), पत्रकारों को संबोधित एवं राष्ट्रीय सेवा संगम की जानकारी साझा करते हुए।

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

सेवा संगम पूर्व तैयारी

राष्ट्रीय सेवा संगम प्रति 5 वर्षों में आयोजित किया जाता है। पिछले बार यह मार्च 2020 में होना निश्चित हुआ था, परंतु कोरोना महामारी के कारण इसे 3 वर्ष बाद 2023 में किया गया। 8 वर्षों के लंबे अंतराल के कारण कार्यकर्ताओं में दोगुना उत्साह था एवं आयोजन को भव्य रूप देने का हर संभव प्रयास किया गया। भूमि पूजन के तुरंत बाद ही कार्यक्रम की वृहद स्तर पर पूर्व तैयारी शुरू की गई थी जिसमें देशभर से आने वाले प्रतिनिधियों की आवास व्यवस्था , प्रदर्शनी अलग-अलग सत्रों हेतु बौद्धिक पंडाल स्वच्छता इत्यादि की संपूर्ण व्यवस्था कार्यकर्ताओं द्वारा सुनिश्चित की गई।

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

कृतिरूप सेवा दर्शन
(सेवा प्रदर्शनी)

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

भूमिका

लगभग 58200 वर्गफुट क्षेत्रफल में 5 स्थानों पर संजोई गयी इस **कृतिरूप सेवा दर्शन (सेवा प्रदर्शनी)** का नाम **"यादव राव जोशी जी"** के नाम पर रखा गया। इस सेवा प्रदर्शनी के प्रबंधन में 12 स्थानीय प्रबंधक पूरे समय रहे। प्रदर्शनी का उद्देश्य देशभर के सभी प्रान्त संस्थाओं, सेवासंस्थाओं और मातृ संस्थाओं के साथ गौसेवा, ग्रामविकास और पर्यावरण गतिविधि द्वारा संचालित सेवाकार्यों का परिचय दर्शन कराना रहा। कुल 334 छोटे बड़े पोस्टर्स से 2200 फ़ीट लंबी दीवार सजाने के अतिरिक्त कुछ अन्य माध्यम भी लिए गए जिनसे सेवादर्शन अधिक रोमांचक और सजीव हो सका। देशभर में संचालित 65 से अधिक सेवाकार्यों में अधिक प्रचलित 14 सेवाकार्यों के व्यवस्थित रूप को अलग अलग मॉडल्स के रूप में रखा गया जिनका व्यवस्था परिचय लिखित पोस्टर्स में लगाया गया। इसके अतिरिक्त रेत कला के सहयोग से नानाजी देशमुख का विकसित ग्रामदर्शन भी प्रस्तुत किया गया। देशभर में चल रही सेवा कार्यों की सक्सेसफुल स्टोरीज को कठपुतली नृत्य के साथ और नुक्कड़ नाटक के साथ प्रस्तुत करने का सफल प्रयोग उन कहानियों को अधिक जीवित कर गया। विश्वविद्यालय और अन्य स्वतंत्र चित्रकारों ने लाइव पेंटिंग में कार्यकर्ताओं के अनुभवों को अपनी कल्पना से कैनवास पर उकेरा। कैलीग्राफी राइटिंग से 1200 से अधिक दर्शकों के नाम इत्यादि उनकी मांग अनुसार लिखकर दिए | प्रदर्शनी के **भारतमाता मंडप** और **गोविंदकृपा मंडप** के मध्य में स्थापित **रंगमंच चौक** अनेकों कार्यकर्ताओं और बच्चों की प्रतिभा प्रदर्शन का प्लेटफॉर्म भी बना। ग्रामविकास में वैभवश्री कई संकल्पना को साकार करते हुए गांव के एक घर और चौपाल इत्यादि का मॉडल बनाया गया जहां गौसेवा, जल संरक्षण, कुटीर उद्योग, नारी सशक्तिकरण और उन्नत कृषि तकनीक जैसे संदेश समाहित थे। पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेकर अनेकों उल्लेखनीय उदाहरण देने वाली इस गतिविधि ने रसोई बगिया, सघन वन, पक्षी घर और जल संरक्षण जैसे अनोखे प्रयोग जीवंत रूप में दिखाकर सुंदर वर्णन किया। जयपुर के आराध्य देव "श्री गोविंददेवजी की झांकी" और "मोतीडूंगरी के श्री गणेश जी का 251 किलो का लड्डू", **वीर महापुरुषों और वीरांगनाओं के विशालकाय प्रतिमा स्थान भी सेल्फ़ीपोइंट** रूप में आकर्षण का कारण बने। विज़िटर बुक और स्टिकी नोट्स की सहायता से 500 से अधिक टिप्पणियां संकलित हुई।

प्रदर्शनी उद्घाटन

सेवा संगम में प्रदर्शनी मुख्य आकर्षण का केंद्र रही जिसमें **"स्वावलंबी भारत-समृद्ध भारत"** की संकल्पना प्रस्तुत की गई। राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा देशभर में चल रहे सेवा कार्यों का **"कृतिरूप सेवा दर्शन" (सेवा प्रदर्शनी)** द्वारा प्रदर्शित किया। चैत्र, पूर्णिमा विक्रमी संवत 2080, गुरुवार दिनांक 6 अप्रैल 2023 को जयपुर में आचार्य सुधांशु जी महाराज, पूज्य स्वामी महेश्वरानंद जी महाराज, जयपुर राजघराने की राजकुमारी दिव्या कुमारी, श्री अशोक बागला जी, माननीय प्रेम गोयल जी, श्रीमान श्रवण कुमार जी द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। राष्ट्रीय सेवा भारती के **वार्षिक प्रतिवेदन 2023** का अनावरण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. रामकुमार जी द्वारा तथा प्रस्तावना श्रीमती चंद्रिका चौहान जी द्वारा की गयी। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी को 5 भागों में बांटा गया है- गोविंद जी महाराज की झांकी दर्शन, भारत माता पंडाल, रंगमंच चौक, राजस्थान के वीर महापुरुषों की मूर्तियों के साथ सेल्फी प्वाइंट तथा सेवा कार्य में पूरा जीवनकाल व्यतीत करने वाले कार्यकर्ताओं का जीवन परिचय और संस्थाओं द्वारा तैयार सामग्री के विक्रय स्टॉल की जानकारी भी दी गई। श्री विनोद बिड़ला जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी मंच पदाधिकारी अन्य ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ कार्यकर्ता बंधुओं, भगिनियों का अभिनंदन किया।

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

सेवा प्रदर्शनी उदघाटन सत्र: (बायें से) मा.प्रेम जी गोयल ,पूर्व अखिल भारतीय सेवा प्रमुख , विश्व जागृति मिशन के संस्थापक आचार्य सुधांशु महाराज ,विश्व गुरु महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वरानंद, मा.दिया कुमारी जी (राजसमंद सांसद), श्रीमान अशोक बागला जी युवा उद्योगपति, श्रीमान श्रवण कुमार उपाध्यक्ष राष्ट्रीय सेवा भारती

डॉ. राम कुमार जी कार्यक्रम में मंच संचालन करते हुए

श्रीमती चन्द्रिका चौहान जी कार्यक्रम की प्रस्तावना की प्रस्तुति करते हुए

श्री विनोद बिड़लाजी कार्यक्रम में उपस्थिति अभिनन्दन करते हुए

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

माननीय विशिष्ट अतिथियों को राष्ट्रीय सेवा संगम की स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए

राष्ट्रीय सेवा भारती के वार्षिक प्रतिवेदन 2023 का अनावरण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

श्रीमान अशोक बागला जी का उद्बोधन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक सदा जिस तरह से राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण का कार्य कर रहा है वह अद्भूत है। यदि व्यक्ति की निर्माण प्रक्रिया मजबूत है तभी राष्ट्र का निर्माण अच्छा हो सकता है। हमें हमारे हर भाई का साथ देना चाहिए।

श्रीमती दिया कुमारी जी का उद्बोधन

श्री गोविन्द जी की पवनधरा जयपुर में सभी अतिथियों का स्वागत है। परम पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी की जन्म शताब्दी वर्ष से सेवा भारती की जिन सेवाओं का संगठित प्रयास प्रारंभ हुआ था , उसके विराट स्वरुप का दर्शन अगले तीन दिनों में हम सब करने वाले है । स्वामी विवेकानंद जी ने भी कहा था **"दरिद्र देवो भव दुर्बल देवो भव, और रुग्न देवो भव"** ऐसे देव रूपी समाज की सभी तरह से सेवा करने वाले रा. स्व. संघ के सेवकों की संख्या १ लाख से अधिक है। यह देश के साथ विदेशो में भी सेवा कर रहे है। अनेकों दुर्गम क्षेत्रों में यह सेवा कार्य चल रहा है। जाती, मत, पंथ और संप्रदाय से ऊपर उठकर किये गए सेवा परिणाम काफी अच्छा है।

परमहंस महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानंद जी महाराज

परमहंस महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्द जी महाराज जी ने अपने उद्बोधन में शाकाहारी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

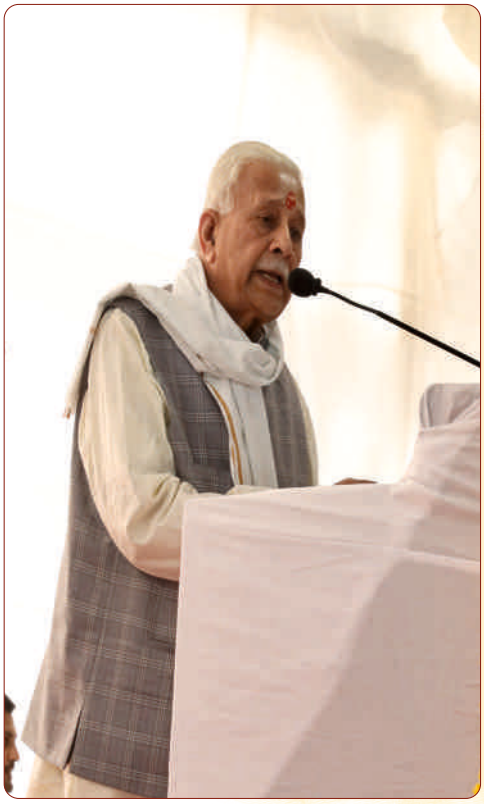

माननीय प्रेम गोयल जी का उद्बोधन

राष्ट्रीय सेवा भारती एक ऐसा संगठन है जिससे यहाँ उपस्थित अनेक बन्धु भगिनी जुड़कर सेवा साधना कर रहे हैं। सेवा तो वो है जिसके बदले में कुछ लेना नहीं है। निष्काम सेवा अपने लिए नहीं अपनों के लिए जीना है। संघ कुछ नहीं करता है न करेगा लेकिन संघ के स्वयंसेवक वह सब कुछ करेंगे जिससे देश का हित है। हमारे पूर्वजों ने अपने परिश्रम से भारत को **विश्वगुरु भारत , जगत गुरु भारत** तथा **सोने की चिड़िया** बनाई थी। अब तो देश में सोने की कमी नहीं है। हमारा देश पुनः विश्व गुरु और जगत गुरु तो बनेगा ही बनेगा परन्तु **"सोने की चिड़िया नहीं बनेगा, सोने का शेर बनेगा"**, जिसे लूटा नहीं जा सकेगा। इसके सामने सबको नतमस्तक होना पड़ेगा। सज्जन शक्ति के सहयोग से विश्व को यह एहसास कराएँगे। बीच के काल खंड में कुछ भूल गए और कुछ हमें भुला दिया गया। देश के सभी लोग संघ के स्वयंसेवक जंगलों में पहाड़ों की चोटियों पर सब जगह जायेंगे और देश की सज्जन शक्ति को जगायेंगे । महाऋषि अरविन्द की भविष्यवाणी है की **"अखंड भारत जो अभी खंडित हो गया है, वह पुन: अखंड बनेगा**", यह हमारा विश्वास है।

आचार्य सुधांशु जी महाराज का उद्बोधन

गीता में भगवन श्रीकृष्ण कहते है

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥

निरंतर संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति जब मुझसे लगातार जुड़ा हुआ है, जिसका निश्चय पक्का है और इस तरह से पूजा पाठ से या सेवा से मुझसे लगा हुआ है **"वह मुझे प्रिय है"**। सेवा वाले को भगवान स्वयं याद करते है। हमें हनुमान जी से प्रेरणा लेनी चाहिए। हनुमान जी को भी जामवंत जी को जगाना पड़ा था। हमारे बीच भी जामवंत जगाने के लिए चाहिए। जिसे भी कार्य करना है, उसे किसी से शिकायत या किसी का धन्यवाद नहीं लेना है।

गड़ गए जो नीव में उन पत्थरों को याद कर लो ।
जो नहीं देते दिखाई उन बहादुरों को याद कर लो॥

एक निवेदन ध्यान रखे क्षीर भवानी के मंदिर में जब स्वामी विवेकानंद गए और ध्यान लगा कर बोले माँ मैं तुम्हारा मंदिर बनाना चाहता हूँ। अन्दर से आवाज आई की जन जन में जो भावना टूटी है मंदिर वाली उसे जगाने की जरुरत है। और उसके बाद वे भारत माँ का मंदिर बनाने के लिए जन जन को जोड़ने का कार्य किया वह साधारण काम नहीं था। आज इतिहास बन रहा है, भले ही हमारा प्रयास गिलहरी का हो, सब को लगना होगा और अपनी भूमिका निभानी होगी। आपको भगवान ने पहचाना है इसलिए आप सेवा कार्य में लगे हुए हैं।

सेवा प्रदर्शनी दर्शन

सेवा प्रदर्शनी दर्शन

सेवा प्रदर्शनी दर्शन

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

सेवा के दीप स्तंभ

सेवा के दीप स्तंभ सेवा क्षेत्र के रोल मॉडल अपने संपूर्ण जीवन को **नर सेवा नारायण सेवा** के लिए खपा देने वाले ऐसे कई महान महामना हो गए हैं। सीमा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के लिए दीप स्तंभ गए हैं। वह उनके रोल मॉडल आदर्श बने हैं व प्रेरणा लेकर कार्यकर्ता स्वयं को अपने पिछड़े वाजिद बंधुओं को सेवा में लगा रहे हैं। ऐसे ही दीपस्तंभ है:

कर्मवीर अजीत जी

इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडल प्राप्त कर प्रचारकों में से एक अजीत जी ने अपने अल्प जीवन काल में बेंगलुरु में हिंदू सेवा प्रतिष्ठान की स्थापना की एवं ट्रेनिंग देकर सेवाव्रती भी तैयार किए है। महिलाएं भी अपना पूरा जीवन सेवाव्रती के रूप में समाज को दे सकती हैं, इस परिकल्पना को साकार किया, पिछले 42 वर्षों से यहां से ट्रेनिंग लेकर 4000 से अधिक लोगों ने अपना जीवन सेवा कार्यो के लिए समर्पित किया, जिनमें 3500 महिलाएं हैं।

माधवराव काणे

कल्याण के एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे, गोवा मुक्ति संघर्ष में सत्याग्रही, 1964 में कल्याण नगर पालिका में देश के सबसे युवा एवं सफल अध्यक्ष होने के बावजूद ठाणे जिले के तलासरी तालुका में बनवासी बालकों को पढ़ाने व आगे बढ़ाने के लिए जीवन के 28 वर्ष समर्पित करने वाले काणे जी, जीवन भर सिर्फ औरों के लिए जिए, उनके ही प्रयासों से तलासरी, दहानू व पालघर में नक्सलवाद जड़ से समाप्त हो गया।

नानाजी देशमुख

महाराष्ट्र के हिंगोली तालुका के कडोली गांव के चंडिका दास जो 1934 में हेडगेवार जी द्वारा चयनित प्रथम 17 स्वयंसेवकों में शामिल थे तथा जनसंघ की स्थापना के साथ ही जेपी आंदोलन के व्यूह रचनाकार भी थे, उन्होंने चित्रकूट जैसे पिछड़े क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना कर आसपास के 500 गांव में विकास की नींव रखी।

सदाशिव गोविंदराव कात्रे

मध्य प्रदेश के अरोन कस्बे के सदाशिव, जिन्होंने स्वयं कुष्ठ रोगी होकर भी गुरु जी की प्रेरणा से 60 वर्ष की उम्र में साइकिल चलाना सीखकर अन्य संग्रह कर वंचितों को खिलाने के साथ ही सेवा कार्य की शुरुआत की। आज 85 एकड़ भूमि में बसे भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा में 300 से अधिक रोगी आत्मनिर्भर है।

विष्णु जी

विष्णु कुमार भारत के दक्षिण प्रांत में जन्मे बचपन से ही होनहार राष्ट्रभक्त और सेवाभावी बालक थे इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करते ही हिंदुस्तान एयर क्राफ्ट लिमिटेड कंपनी का जोइनिंग लेटर भी प्राप्त कर लिया पर कुदरत को तो कुछ और ही मंजूर था। इसी बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवराज जी से विष्णु जी का परिचय हुआ फिर उन्होंने प्रचारक बनकर सेवा करने का संकल्प लिया। विष्णु जी को दिल्ली के राजनीतिक गलियारों की हलचल कभी नहीं भायी, वह हमेशा से ही सेवा के अवसर तलाशते रहते थे दिल्ली के जहांगीरपुरी का वह सेतु जिसे लोग स्लम कहते हैं उसे विष्णु जी ने सेवा बस्ती का नाम दिया।

यादव राव जोशी

नागपुर में 3 सितंबर 1914 को वेदपाठी परिवार में जन्मे एक मराठी भाषी ने संघ कार्य के अग्रणी के रूप में दक्षिण भारत में कार्य किया बाल भास्कर के रूप में प्रसिद्ध जोशी जी ने **"नमस्ते सदा वत्सले"** को पहली बार गाया। दक्षिण के सेनापति कहे जाने वाले जोशी जी ने तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्र प्रदेश में संघ कार्य की नींव रखी व सेवा को संघ के काम में शामिल किया।

सेवा प्रदर्शनी की झलकियाँ

सेवा प्रदर्शनी की झलकियाँ

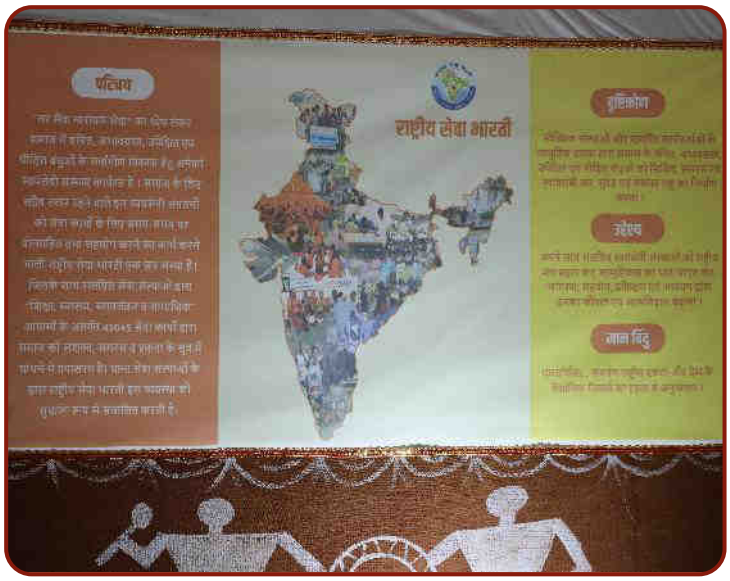

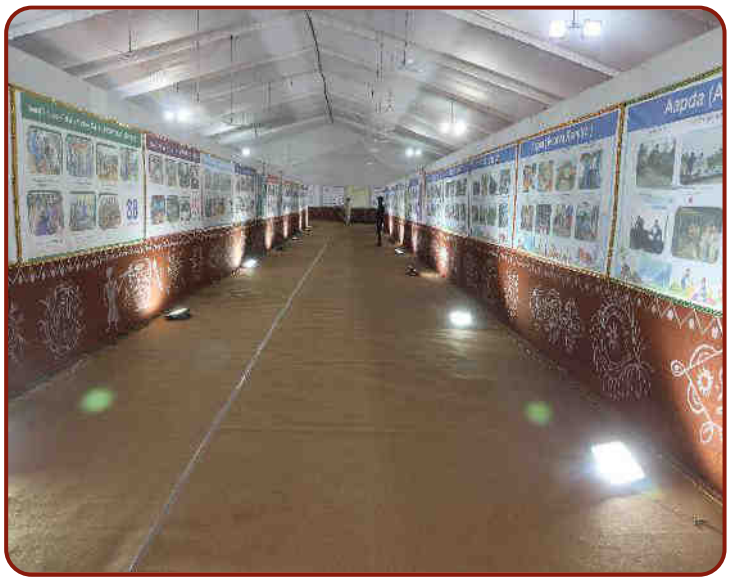

सेवा प्रदर्शनी की झलकियाँ

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

उदघाटन कार्यक्रम

(7 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

सेवा संगम का उद्घाटन

बैशाख, कृष्ण प्रतिपदा, विक्रमी संवत 2080, शुक्रवार दिनांक 7 अप्रैल 2023 को जयपुर में **मा.श्री नरसीराम कुलरिया जी**, अध्यक्ष स्वागत समिति , **श्री अजय पीरामल जी** , चेयरमैन -पीरामल उद्योग समूह , **परम पूजनीय डॉ. मोहन राव भागवत**, सर संघचालक-रा.स्व.संघ, **पूजनीय बालयोगी उमेशनाथ जी महाराज** द्वारा राष्ट्रीय सेवा संगम का उद्घाटन किया गया। राष्ट्रीय सेवा भारती की वार्षिक पत्रिका **"सेवा साधना"** का अनावरण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रेणु पाठक जी द्वारा तथा प्रस्तावना मा. राज कुमार मटाले जी द्वारा दी गयी। मा. पन्ना लाल जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी मंच पदाधिकारी अन्य ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ कार्यकर्ता बंधुओं, भगिनियों का अभिनंदन किया। मंचस्थ अतिथियों द्वारा आशीर्वचन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राष्ट्र गीत "वन्दे मातरम्" के साथ समारोह का समापन

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

श्रीमती रेणु पाठक जी कार्यक्रम में मंच संचालन करते हुए

श्री राज कुमार मटाले जी कार्यक्रम की प्रस्तावना की प्रस्तुति करते हुए

श्री पन्ना लाल भंसाली जी कार्यक्रम में उपस्थिति अभिनन्दन करते हुए

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

मंचस्थ अतिथियों को राष्ट्रीय सेवा संगम की स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए

राष्ट्रीय सेवा भारती की वार्षिक पुस्तक सेवा साधना का अनावरण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया।

माननीय श्री नरसीराम कुलरियां जी

आगंतुकों का स्वागत श्री माननीय श्री नरसीराम कुलरिया जी ने किया। इन्होंने स्वागत का मर्म बताते हुए कहा कि **स्व-** अर्थात आत्मा एवं **आगत** अर्थात सभी आगंतुकों। इसे सेवा संगम के आगंतुकों की विशेषता रही है कि सभी अपेक्षा से दूर रहते हुए निरंतर कार्य कर रहें है। सभी मिलकर स्वामलंबी भारत की श्रेष्ठ मातृ कल्पना को साकार करेंगे। आमतौर पर व्यक्ति के लिए उसका परिवार पोषण मुख्य दायित्व होता है। हममें से अधिकांश सभी देशवासियों को अपना परिवार मानते हैं और इसी भाव से कार्य करते हैं। आज शहर के अतिरिक्त ग्रामीण स्तर पर भी रोजगार की कमी है। सभी स्तरों पर उपलब्ध हुनर को पहचानना और उसको तराशना और इस प्रकार स्वावलंबन के माध्यम से सनातन का विकास करने की नितांत आवश्यकता है। स्वयं का अनुभव बताते हुए कहा कि संघ के संपर्क में आने के बाद उन्होंने जाना कि कितनी अधिक संख्या में हमारे बंधु अपना परिवार छोड़कर बिना किसी प्रसिद्धि की चाह से सेवा कार्य में लगे हुए हैं। **निस्वार्थ सेवा का पर्याय संघ का सेवा कार्य है।**

मा. श्री राज कुमार मटाले जी

सेवा संगम की प्रस्तावना को प्रस्तुत करते हुए कहा कि नानाजी देशमुख कहा करते थे कि "**मैं अपने लिए नहीं, अपनों के लिए हूँ**"। हमें देश के संपूर्ण भू-भाग से व्याप्त विषमता को दूर करनी है। हमारे सनातन धर्म में एक पुरानी परंपरा की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि प्रत्येक वर्ष कई स्थानों पर आयोजित होने वाले माघ के मेले में हम अपने ज्ञान शक्ति, प्राण शक्ति को कर्म शक्ति पुण्य शक्ति बढ़ाने के लिए कल्पवास करते हैं। पुण्य प्राप्ति का लक्ष्य पूरा करते है। सेवा से भी अपने आप में पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। देश के अंदर भिन्न संगठनों के माध्यम से हमारे छोटे-बड़े कार्यकर्ता एक जगह एकत्रित होकर जब अपने सेवा कार्य पर विचार विमर्श करते हैं और एक ही विषय पर अलग-अलग अपने क्षेत्रों में कार्य करते हुए अपने अनुभव का आदान-प्रदान करते हैं तो वह एक वृहत मानव सेवा का प्रकल्प तैयार होता है। सेवा संगम इन भावों को और प्रभावी बनाते हुए इसे सुदृढ़ करता है।

सरसंघचालक जी का हृदयस्पर्शी पाथेय

"दूसरे के दु:ख को देखकर मात्र दु:खी होना ही पर्याप्त नहीं है, उस दु:ख को दूर करने के लिए दौड़ना चाहिए।"

"यह सेवा संगम का तीसरा आयोजन है। जहां-जहां समाज में आवश्यकता है उन जगहों पर संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्य लगातार करते रहते हैं। औपचारिक रूप से सेवा विभाग का गठन कर सेवा की एक बड़ी सृष्टि खड़ी हुई है। हमारे देश में सेवा को सर्विस का नाम देने पर प्रबुद्ध जन के मन दुनिया भर में चल रहे मशीनरी कार्यों का ध्यान आता है। इसे संज्ञान में लेकर एक बार चेन्नई में हिंदू संत आमंत्रित कर हिंदू संत सेवा फेयर आयोजन किया गया था। दक्षिण के 4 प्रांतों कर्णाटक, तमिलनाडु, केरल एवं आंध्र प्रदेश के हमारे आचार्य सन्यासी सब मिलकर जो सेवा करते हैं वह दुनियाभर में मिशनरीयों द्वारा किये जा रहे कार्यों से अधिक सेवा कार्य कर रहे हैं। सेवा मनुष्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, मनुष्य और पशु दोनों में संवेदनाएं होती है. परंतु करुणा का भाव मनुष्य को पशु से अलग करता है। C -20 में करुणा का भी ग्लोबलाइजेशन करने का विचार दिया गया। हमारे सनातन धर्म में सत्य के बाद करुणा को आधार स्तम्भ माना गया है। करुणा सत्य की तार्किक परिणिति है। हम सब एक तत्व से अनुप्राणित है तो सिर्फ हम सुखी हो और आस पास के दुखी हो ऐसा देखा नहीं जायेगा।"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के "सरसंघचालक जी मोहन राव भागवत" द्वारा राष्ट्रीय सेवा सगम के उद्घाटन कार्यक्रम में दिया गया उद्बोधन

ईशा वास्यमिद सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
तेन त्येक्रेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्दनम्

मेरे पास जो है वह सबके लिये देकर जो बचता है उसमें मेरा चलाऊंगा। वह सबमे मैं हूँ, मुझ में सब हैं। सेवा ऐसी प्रत्यक्ष अनुभूति है। इस भाव से सेवा होती है तो हमारे देश की समरसता का साधन मिलता है। हम सब मिलकर समाज है, एक के बिना भी हम अधूरे हैं। हम सब एक राष्ट्र के अंग हैं। हमारे किसी अंग में अगर सुई चुभती है तो सारा शरीर उस अंग की सोचने में लग जाता है। समाज का एक अगर उपेक्षित है, दुबला है पीछे रह गया है तो उसे पराश्रित कहा जाता है। समाज मेरा अपना है सम्पूर्ण समाज के में अपने आपको देखता हूँ। मैं अपने समाज के किसी भी अंग को दुर्बल नहीं रहने नहीं दूंगा। सेवा स्वस्थ समाज बनाती है इसके लिए हमे भी स्वस्थ होना होगा। इसमें हमें अहंकार नहीं आना चाहिये। सहज सेवा में संकल्प जुड जाता है कि देश बड़ा है। हमारे समाज का एक अंग पिछड़ा है तो हम भी तब तक हम सब भी पिछड़े है। सम्पूर्ण समाज की एक रूप बनाना जिनकी ताकत नहीं है पिछड़ गये हैं उनको संबल देना है, सेवा करनी हैं। देने वाला देता जाय और लेने वाला लेता जाय तो लेने वाले ने एक दिन देने वाले का हाथ ही लेने का मन बना रखा है। भक्ति आंदोलन के कारण भारत का समाज वास्तविक मनुष्य का समाज है जिनके अन्दर एक करुणा है केवल संवेदना नहीं है। जब संघ के स्वयं सेवक सेवा कार्य में लगे है तो से, उन्होंने जाना कि इस कार्य में हम अकेले नहीं है। बहुत से लोग अनेको प्रकार का सेवा कार्य कर रहे है। सेवा का कारक करुणा है जो हमारे धर्म को चार स्तम्भों में एक है हम सभी धार्मिक है अतः इस स्वाभाविक करुणा के कारण सेवा करते रहते हैं। आज सम्पूर्ण विश्व मे जो सेवा स्पर्धा प्रेरित होकर चलता है, उसके बजाय हम इसे **वसुधैव कुटुंब** के आधार पर करुणा के आधार पर अवलेषित हैं। ऐसा उदाहरण भारत को ही रखना होगा। इस दिशा में सब सेवा कार्यों को सदिश बनाना व प्रभावकारी बनाए रखने के लिए परस्पर पूरक होना होगा जिससे यह सेवा अल्प अवधि ने एक सवींग सुदर जिससे सभी समर्थ स्वावलंबन के योग्य है फिर भी अपनत्व को मानकर एक दुसरे पर अवलम्बित होकर आगे बढ़ेंगे।

स्वं चरित्र शिसिर-पृथिव्यां सर्व मानवाः

इस सेवा सगम में वैसे भी लोग आते हैं जो अपने स्तर पर सेवा करते है ऐसे सब लोगो को लेकर सेवा संगम के लिए स्थान छोटे पड़ जायेंगे अत: विकेन्द्रित कर प्रांत एवं विभाग स्तर पर इस प्रकार के सेवा संगम का प्रायोजन किया जाना अपेक्षित होना चाहिये। सेवितो में शिवत्त्व जगाने का भाव लेकर अपनो की सेवा का भाव लेकर कार्य करना चाहिये। इससे उनको जो होगा सो होगा हमारे अपने तन मन को शुद्धि होगी। करुणा से की गई सेवा के आधार पर सुचिता प्राप्त होगी।

सेवा धर्मो परम गहनों योगिनोमप्य गम्य:

यह आचरण हमारे स्वयं सेवक कर रहे हैं। इसे सम्पूर्ण दुनिया मे देना है, यह सेवा संगम के हमारी दृष्टि को विस्तारित करने वाला बने। हमलोग क्या क्या कर रहे हैं और कहां कहां कर रहें है उसे देखकर हमे चलना मिले । हम जहाँ तक अभी पहुंचे नहीं वहां भी जाना है। हमारे समाज में एक ऐसा भी उपेक्षित वर्ग है जिसे 'घुमन्तु' कहते हैं। उनके पास अधिवास नहीं है, अंतर राशन कार्ड भी नहीं है। वोट का अधिकार नहीं है। ऐसा क्यों है? देश के सांस्कृतिक विकास में विभिन्न प्रकार का योगदान देते रहें, विभिन्न विधाओं का प्रचार प्रसार करते रहने के लिए अपना घर छोड़ दिए एक जगह नहीं रहे। विदेशी शासको ने उन्हें अपराधि घोषित कर दिया । उन्हें भुला दिया गया, वहाँ भी हमने सेवा कार्य शुरू किया है। ऐसे कई नये क्षेत्र है जहां तक हमें पहुंचना है और सेवा कार्य करने है।

समाज कल्याण का कार्य कर "सर्वे भवन्तु सुखिन:" को साकार करें !

"जब इस देश भर में समरसता का आंदोलन चला तो संपूर्ण संघ परिवार मिलकर इस देश में समरसता का निर्माण करने का कार्य कर रहे हैं। इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि मंदिरों के शंख एवं घड़ी घंटाल बजना बंद हो गया और पांच वक्त का नमाज सुनाई पड़ने लगा। हमारा देश ऐसा है जहां छोटे-छोटे से घर में संत कबीर, रैदास, कबीर, मातंग ऋषि इत्यादि पैदा हुए हैं। यहां का हर व्यक्ति किसी महापुरुष की संतान है। हम वंचित परिवार के लोगों को गले लगायेगे जैसे श्री राम ने शबरी और निषाद राज को गले लगाया था। उच्च विचार से हमारा कल्याण होगा । यह सेवा संगम में आकर हमें यह प्रेरणा मिलनी चाहिए कि हम अपना कुछ समय देकर समाज कल्याण का कार्य करें और **सर्वे भवन्तु सुखिन:** को साकार करेंगें।"

राष्ट्रीय सेवा संगम में बाल्मीकि धाम उज्जैन के "पीठाधीश्वर बालयोगी उमेश नाथ जी महाराज जी" के आशीर्वचन

सभी कार्यकर्ताओं को "भगवान हनुमान जी" की संज्ञा से विभूषित किया

राष्ट्रीय सेवा संगम में मुख्य अतिथि "श्रीमान अजय पिरामल जी" का सानिध्य प्राप्त हुआ

"हनुमान जयंती के दिन आरंभ की गई इस सेवा संगम के मुहूर्त की सराहना की। सभी कार्यकर्ताओं को **"राम काज करिबे को आतुर"- "भगवान हनुमान जी"** की संज्ञा से विभूषित किया। विगत कोविड काल में सभी कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। उन्होंने बताया कि संघ कार्य से इस देश को परिचय विगत चाइना वार तथा पाकिस्तान वार के समय हुआ। पूरे देश ने संघ कार्य का संज्ञान लिया था। हाल में केरल में आई भीषण बाढ़ के दौरान संघ द्वारा किए गए सेवा कार्य अद्वितीय रहें। उत्तर पूर्व के एकीकरण में भी संघ कार्यकर्ताओं का योगदान अभूतपूर्व रहा। उन्होंने संघ द्वारा किए जा रहे कार्यों के विस्तार पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनके फाउंडेशन तथा ट्रस्ट के माध्यम से 27 राज्यों तथा 2 केंद्र प्रशासित राज्य में सेवा कार्य चल रहे हैं। 1/2 Aspirational District मैं 25000 युवा स्वयंसेवक सेवा कार्य कर रहे हैं। हमारे यहां के जनजाति क्षेत्रों में इनके स्वास्थ्य की चिंता की जा रही है। महिला सेवा कार्यकर्ताओं के लिए एक "करुणा-फेलोशिप" प्रारंभ की गई है। 5000 से अधिक पूर्णकालिक कार्यकर्ता इन सेवा कार्य में लगे हैं। इनके लिए सेवा से अधिक महत्वपूर्ण इनका सेवा भाव है। सेवा भाव में निहित विनम्रता स्पष्ट करते हुए उन्होंने इस प्रचलित सूक्ति को दोहराया:-

तरुअर फल नहिं खात है,
सरोवर पिए न पान,
परहित के कारण ही,
सज्जन भये सुजान।"

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

बौद्धिक सत्र

(8 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

- अच्छा कार्य करने के लिए एक अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये।
- संघ की प्रेरणा से स्वयं सेवको ने अनेको सेवा कार्य किये हैं। नित्य प्रार्थना में उच्चरित परम वैभवम ने तुमें तत्स्वराष्ट्रम से जो संघ की कार्यशक्ति उत्सर्जित होती है उससे अनेको कार्य हो रहे हैं।
- श्रीमद्भागवत गीता में ऐसा कहा गया है कि जो काम विधि के अनुसार निस्वार्थ भाव से किया जाता है उसका फल अच्छा होता है।
- कार्य के स्वभाव के साथ कर्ता के भाव का जब समन्वय होता है तब यह सेवा बन पाता हैं। अन्यथा वह सेवा नहीं होता है। केवल कार्यक्रम होने से काम नहीं चलता है। हमें जब भी सात्विक कार्य करनी होगी तो ईश्वर की कृपा से सबका भला होगा।
- विडीयो खिचाने का काम नहीं करना है। सेवा कार्य में सिर्फ जोश ही नहीं होश की भी आवश्यकता होती है। सेवा कार्य करने के लिए त्याग करना पड़ता है। कार्य ऐसा हो जो नित्य साध्य हो।
- विश्व मंगल की साधना के लिए लोक कल्याणकारी संघ की शक्ति के सुहृद कर ठोस सेवा करना। इस मार्ग में तीन बाधाएं है- अहंकार, अनीति और अधर्मवाद।
- सेवा के कारण मन की तड़पन को विराम मिलता है। किन्तु उसका परिणाम भी हमको चाहिये। हम अपना मत भूलकर सामूहिक निर्णय करते हैं। काम करते समय सुझाव आया हो, छोटे से लेकर बड़े तक कुछ कहते हैं तो उस पर विचार करना जरूरी है।
- संघ ने आपदा प्रबंधन का एक विषय लिया है। इसके लिए यदि आवश्यकता पड़े तो विशेषज्ञ के पास जाना है उनको सम्मान देना है, उनसे जो विशेष ज्ञान मिल सके, उसे विनम्रता पूर्वक ग्रहण करना है और अपना मन बुद्धि और शरीर ठीक रखना है। अपनी जिज्ञासा बढ़ानी है। हमे हर कार्य बड़ी सरलता से करना है। जहां काम करें वहां सरलता अवश्य हो। छली- कपटी सामने आते हैं, तो वहां सतर्क रहना चाहिये। ब्रह्मचर्य एवं संयम के साथ रहना चाहिये ।
- सेवा का कार्य किसी भी दलगत या जातिगत उलझनों में न फंसे ऐसी सतर्कता हमेशा रहनी चाहिये। निन्दा और टीका टिप्पणी से बचना है। किसी के प्रति भी द्वेष नहीं पालना या हानि पहुंचाने का भाव नहीं रखना है।
- काम के लिए अध्ययन करना पड़ता है। हमेशा स्वाध्याय करना पड़ता है। स्वाध्याय करना होगा और उसे समझकर उस पर मनन चिन्तन भी करना है। प्रयोग भी करने हैं। प्रयोग, स्वाध्याय, स्वअभ्यास यह सभी चलते रहना चाहिये। भाषा कभी कठोर नहीं होना चाहियें ।

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम् ।
प्रियं च नामृतम् ब्रूयात, एषः धर्मः सनातनः ॥

- किसको कब कहाँ कैसे बताना इस पर ध्यान देना चाहिये। इसी को सनातन धर्म भी कहा गया है। ज्यादा बोलना नहीं है । बड़बोलापन ठीक नहीं है, ऐसा हो तभी सेवा करना है। निरंतर भाव की शुद्धि करना है। मैं एक सात्विक कार्य करूंगा और प्रतिवर्ष मांपूगा कि कितना हुआ है। कितना कर सकते थे।

-पूजनीय मोहन राव भागवत जी

बौद्धिक सत्र

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

सत्र नियोजन

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

सत्र नियोजन

सत्रों का नियोजन गटश: (दायित्वानुसार-8 गट, आयमानुसार-15 गट, प्रांतानुसार-45 गट, क्षेत्रानुसार-12 गट) किया गया। जिसमे कार्यकर्ताओं के साथ विभिन्न पहलुओं को पर चर्चा की जा सके। कुल 80 गटों में 7 सत्र आयोजित किए गए। इससे कार्यकर्ता को अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों को समझने, अपने संबंधित क्षेत्र में विशेष कौशल विकसित करने, अपने प्रांत के वातावरण और आवश्यकता के अनुसार कार्य करने में सक्षम होने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

समापन सत्र

(9 अप्रैल 2023)

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

समापन सत्र

तीन दिवस चले इस भव्य आयोजन में संत समाज के प्रतिष्ठित सज्जन हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सानिध्य प्राप्त हुआ। जिससे कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ एवं वह निश्चित ही अपने-अपने स्थानों पर जाकर दोगुनी गति से कार्य को गति प्रदान करेंगे। कार्यक्रम का समापन सत्र वैशाख, कृष्ण तृतीय, विक्रमी संवत 2080, रविवार दिनांक 9 अप्रैल 2023 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। अखिल भारतीय सेवा प्रमुख माननीय पराग जी अभ्यंकर ने वर्तमान एवं आगामी कार्य योजना की रूपरेखा सभी के समक्ष रखी। श्रीमान पन्नालाल जी भंसाली अध्यक्ष राष्ट्रीय सेवा भारती एवं श्रीमती रेणु पाठक महामंत्री राष्ट्रीय सेवा भारती ने सभी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

समाज बने समर्थ अमृता स्वाभिमानी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के "सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसवाले" द्वारा राष्ट्रीय सेवा सगम के उद्घाटन कार्यक्रम में दिया गया उद्बोधन

"देशभर से सेवा संगम में आए सेवाभावी कार्यकर्ता सार्थक है। भले ही हम सब छोटी इकाई पर कार्य कर रहे हैं लेकिन हमारा विचार वैश्विक होना चाहिए। भारत तभी समर्थ समृद्ध और स्वाभिमानी हो सकता है जब भारत का प्रत्येक व्यक्ति समर्थ समृद्ध और स्वाभिमानी हो और समर्थ समृद्धि व स्वाभिमानी भारत ही विश्व शांति के लिए गारंटी है, यह हमारा विश्वास है कुष्ठ रोगियों की बात हो या फिर वेश्यावृत्ति के लिए विवश महिलाओं के बच्चों के जीवन की हमें समाज के रूप में इस हिस्से को सशक्त करने की भी चिंता करनी होगी समाज के उस हिस्से को संबल देने की आवश्यकता है जो हाशिए पर माना जाता है। इस सब के लिए सरकार के भरोसे बैठना उचित नहीं है हास्य पर माने जाने वाले समाज के इस हिस्से के प्रति सोच को बदलने वाह उड़ गए मुख्यधारा में लाने के लिए सामूहिक सामाजिक प्रयास करने होंगे **"देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखे"** की भावना जागृत करते हुए हमें सेवित को भी सशक्त करना होगा कि वह भी सेवा करने योग्य हो जाए। यह सेवा संगम पुणे स्थल है जिस प्रकार संगम में डुबकी लगाने से जो पुन्य प्राप्त होता है उसी प्रकार इस सेवा संगम में आने पर हमें पढ़ने प्राप्त हुआ है ऐसे संगम ऊर्जा में वृद्धि करते हैं और नया सीखने का भी अवसर प्रदान करते हैं साथ ही यदि कुछ विफलताओं को लेकर मन कमजोर होता है तब उसमें भी ऐसे संगम सकारात्मक ऊर्जा भरते हैं देखिए किसी भी कार्य के परिणाम के परिणाम में ईश्वर कृपा का भी महत्व होता है हमें हमारे प्रयासों में किसी तरह की कमी नहीं रखनी चाहिए श्रीमदभगवत गीता का श्लोक है:

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्।

इसका अर्थ है कि सेवा कार्य का सबसे पहला चरण सेवा के विचार का अधिष्ठान है। दूसरा चरण उस कार्य के करने के लिए साधनों का है, तीसरा चरण कार्य को मूल मूर्ति रूप देकर देने का है इसके बाद चौथा चरण ईश्वर कृपा का है जिस तरह किसान खेत जोतता है बुराई करता है। लेकिन अंत में फसल के अनुकूल बारिश सर्दी गर्मी ईश्वर प्रदान करता है। हमें सेवा का कार्य ईश्वरीय कार्य समझकर करना है स्वामी विवेकानंद जी ने कहा करते थे कि अज्ञानी और अशिक्षित लोगों की पीड़ा को नहीं सुनने वाले द्रोही होते हैं। इसलिए मैं उस ईश्वर की आराधना करता हूं जिसे मूर्ख लोग मनुष्य कहते हैं इसलिए सेवा करते समय हमें सिर्फ मनुष्य में परमात्मा का अंश देखना है और उसकी सेवा करनी है हम सब में सेवा का गुण स्वाभाविक है संपूर्ण भारत भूमि से एक ट्रस्ट है और हम सभी उसके ट्रस्टी यह हमारा व्यावहारिक अध्यात्म है। इसकी अनुभूति के लिए सेवा में सच्चा मन रखना होगा एक बात और सेवा साधकों को अपने कार्य की समीक्षा निरंतर करते रहनी चाहिए।"

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

वर्तमान एवं आगामी कार्य योजना की रूपरेखा

- इस सेवा संगम में 698 संस्थाएं एवं 15 अखिल भारतीय स्तर की संस्थाओं से 2131 पुरुष तथा 497 मातृशक्ति अर्थात कुल 2628 प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
- हिंदू होने के नाते करुणा का भाव तथा सेवा की भावना हमारे रग-रग में बसा हुआ है
- हमारे संगठन सदिश हो यह प्रयास हमेशा ही जानी चाहिए।
- हमने अपने राष्ट्र के वंचित, अभावग्रस्त, अपेक्षित एवं पीड़ित की सेवा का व्रत लिया है।
- हमारे सेवा की वर्तमान दिशा में 2792 नगरों एवं 32000 सेवा बस्तियों में सेवा कार्य जारी है। इन बस्तियों से 31808 शाखाएं जुड़े हुए हैं। मिलन की 22679 शाखायें भी अपना कार्य तत्परता से कर रही है।
- अक्टूबर 2023 तक सभी बस्तियों तक पहुंचने का लक्ष्य है।
- संघ की अपनी 872 सेवा संस्थाएं कार्यरत है।
- आगे हमारा लक्ष्य संवाद बढ़ाना है। जिस स्तर पर पहुंचना वहां तक सार्थक संवाद करते हुए अपनी बातें पहुंचानी है। जिला स्तर पर कार्य करना है तो विभाग के सेवा प्रमुख इकाइयों से समुचित संवाद किया जाना चाहिए।
- 55000 स्थलों पर गांव का विकास हो इसकी तैयारी चल रही है। 11 मात्र संगठन भी अपनी सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।
- इसका विशेष ख्याल रखते हैं कि हर प्रकार की श्रेणी के अंदर काम चलता रहे। प्रत्येक 5 वर्ष में हम इसका आंकड़ा एकत्रित करते तथा राष्ट्रीय सेवा भारती इसका आंकलन, विश्लेषण, अध्ययन करती है। जिससे कि और अच्छे तरीके से आगे काम किया जा सके। पिछली बार 1,43000 सेवा कार्य किए गए आगे 2 महीने का प्रशिक्षण, 2 महीने का अध्ययन के उपरांत हम सदिश सेवा कार्य करने में समर्थ हो सकेंगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के "अ. भा. सेवा प्रमुख माननीय पराग जी अभ्यंकर" द्वारा वर्तमान एवं आगामी कार्य योजना की रूपरेखा सभी के समक्ष रखी

समापन सत्र

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

सांस्कृतिक कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

शनिवार,8 अप्रैल 2023, रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम की सुन्दर प्रस्तुति की गई। इस कार्यक्रम का विषय "**पधारो म्हारे देश**" रहा। जिसमें राजस्थान के गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को चलचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। कलाकारों के द्वारा लोक गीत और लोक नृत्य की प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम को देखकर सेवा संगम में आए प्रतिनिधि रोमांचित हो उठे व पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

व्यवस्था

राष्ट्रीय सेवा संगम
2023

यातायात व्यवस्था

लगभग 3 किलोमीटर की परिधि में फैले संगम परिसर में अलग-अलग खंडों में जाने के लिए बैटरी चलित ऑटो (टुकटुक) ऊंट गाड़ी, घोड़ा गाड़ी और गाड़ियों की व्यवस्था की गई। प्रतिभागी विभिन्न सत्रों के लिए इधर उधर जाने के दौरान इनका उपयोग कर रहे थे। विशेष रूप से घोड़ा गाड़ी और ऊंट गाड़ी में बैठ कर उन्हें बड़ा आनंद आया।

आवास व्यवस्था

सेवा संगम में व्यवस्था की सुगमता के लिए सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने रात दिन एक करते हुए छह नगर महान विभूतियों के नाम पर बसाये (भगिनी निवेदिता नगर (मातृशक्ति के लिए)- गुलाबी रंग, एकनाथ रानाडे नगर-पीला रंग, सूर्य नारायण राव नगर-लाल रंग, नानाजी देशमुख नगर-हल्का हरा रंग, नित्यानंद नगर-बैंगनी रंग, बाला साहेब देशपांडे नगर -भगवा रंग) नगरो की कुशल व्यवस्था के लिए 800 से अधिक प्रबंधक जोड़ें, इसमें 60 मातृशक्ति भी शामिल रही। जिन्होंने एहसास कराया कि सेवा कार्यों के मामले में मातृशक्ति की किसी से पीछे नहीं है। नगरों में कार्यकर्ताओं को किसी भी प्रकार की असुविधा ना हो इसलिए सभी नगरों को अलग-अलग रंग से सजाया गया। कार्यकर्ताओं को परिचय पत्र भी इसी आधार पर दिया गया।

भोजन व्यवस्था

अतिथियों के भोजन की व्यवस्था 4 नगरों (एकनाथ रानाडे नगर, भगिनी निवेदिता, सूर्यनारायण राव, डॉ. नित्यानंद नगर) में ही रखी गई थी। वहां स्वचालित रोटी बनाने की मशीन भी लगाई गई थी; मोटे अनाज की रोटी भोजन में शामिल की गई। पर्यावरण व स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा गया। कार्यक्रम स्थल पर पीने के लिए तांबे व स्टील के गिलास रखे गए थे। चाय कॉफी व छाछ के लिए कागज के डिस्पोजल सभी के लिए उपलब्ध थे। भोजन व्यवस्था के अंतर्गत सेवा संगम के समापन पश्चात प्रतिनिधियों को प्रस्थान के समय रास्ते के लिए भोजन पैकेट व्यवस्था भी की गयी।

जल व्यवस्था

जल व्यवस्था के अंतर्गत पेयजल की सुविधा सभी नगरों में कक्ष के बाहर, बैठक पंडाल और भोजन पंडाल में की गई। जल मंदिर की व्यवस्था भी की गई जिसमें हिंग, तुलसी, इलायची, अजवाइन व जल जीरा का पानी भी रखा गया। जल संरक्षण पर भी जोर दिया गया, इस हेतु कपड़े धोने हाथ धोने और नहाने के बाद बहते हुए पानी को सीधे पौधों की सिंचाई के लिए काम में लिया गया।

स्टाल व्यवस्था

सेवा संगम में सामाजिक उत्थान हेतु ग्राम विकास, कृषि, गौ संरक्षण व संवर्धन पर्यावरण, स्वावलंबन व स्वरोजगार, चिकित्सा, शिक्षा, किशोरी विकास, लघु उद्योग आदि को स्टाल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। सेवा संगम में कुल 58 साल की व्यवस्था की गई।

स्टाल व्यवस्था

SEWA
INTERNATIONAL
EXIBITION / SALE
SEWA KALA SRUSHTI PVT. LTD

सेवा भारती शंकराचार्य मंडल, भोपाल
सेवा भारती गोबर शिल्प
स्वयं सहायता
समूह

8 विश्व जागृति मिशन, दिल्ली
विश्व जागृति मिशन के सेवा प्रकल्प

सेवा भारती मेरठ प्रान्त
स्वस्थ जीने के षट्
आवश्यक नियम
कैंसर मुक्त भारत अभियान
सेवा भारती मेरठ
स्वस्थ जीने के षट्
आवश्यक नियम
सेवा भारती मेरठ प्रान्त
कैंसर मुक्त भारत अभियान

स्टाल व्यवस्था

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

वैशाख, कृष्ण 2080,शुक्रवार से रविवार (7-9 अप्रैल 2023)

कुल प्रतिनिधि 2628

2131

497

आयामश: 15

क्षेत्रश: 12

गटश: बैठक 80

प्रान्तश: 45

दायित्वानुसार: 8

मातृसंस्था 15

कुल संस्था 698

कृतिरूप सेवा दर्शन (सेवा प्रदर्शनी)

भारत माता पंडाल | गोविन्द देव पंडाल |
राजस्थान के वीरमहापुरुषों की मुर्तिया | सेल्फी पोइंट

सेवा के दीप स्तंभ

मॉडल 65 सेवाकार्य में से 14 व्यवस्थित सेवाकार्य

2200 फीट दीवार

पोस्टर 334

स्टाल 58

Feedback & Comments

500

कुल सेवा कार्य 43045

स्वास्थ्य 10513

शिक्षा 16184

सामाजिक 9543

स्वावलंबन 6805

प्रकाशन

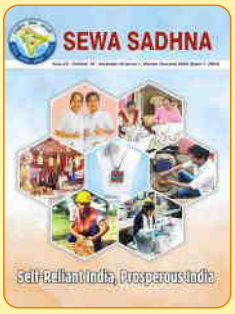

वार्षिक विशेषांक सेवा साधना (हिंदी / अंग्रेजी)

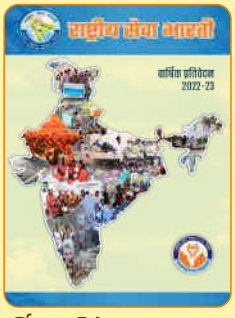

वार्षिक प्रतिवेदन 2022-2023

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

"स्वावलम्बी भारत, समृद्ध भारत"

राष्ट्रीय सेवा संगम 2023

धन्यवाद

राष्ट्रीय सेवा भारती

बी.डी.-37, गली न.- 14, फैज़ रोड, करोल बाग,

नई दिल्ली -110005